International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(4): 101-104

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(4): 101-104
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-04-2021
Accepted: 10-06-2021

डॉ0 चन्द्रप्रभा गंगवार
असि0 प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 चन्द्रप्रभा गंगवार
असि0 प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश, भारत

वाल्मीकीय रामायण में मानवाधिकार की संकल्पना

डॉ0 चन्द्रप्रभा गंगवार

प्रस्तावना

मानव की प्रत्येक क्रिया के पीछे उसका उद्देश्य सुख और शान्ति की प्राप्ति है। समाज में सभी लोग बराबर है न कोई छोटा है न बड़ा। समभाव की कामना से ही मानव समाज का उत्थान सम्भव है। ऐसे कल्याणकारी उपदेश का जय घोष वेदों में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।

संगच्छध्वं एवं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यधा पूर्वे संजानाना उपासते।।[1]

अर्थात् मिल कर बैठना, संवाद करना, मन एक बनाना, मन एक बनाकर भाग या अधिकार का सेवन करना ये चार सामाजिक जीवन के सेतु हैं।''

आज के भौतिकवादी युग में बौद्धिक जागरूकता ने व्यक्ति को अमंगलकारी प्रतिस्पर्धाओं में इतना अन्धा कर दिया है, कि वह मानवीय मूल्यों को भूलता जा रहा है और अपनी पूर्ति के लिए दूसरों को हानि पहुँचाने में भी संकोच नहीं करता है। अपने सुख के लिए वह दूसरे मानव का रक्त बहाने में जरा भी विलम्ब नहीं करता है।

यह सत्य है कि जब से मानव सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ है, तब से आज तक हमने विकास के जिन सोपानों को पार किया है, उनमें एक–दूसरे के प्रति स्नेह व सम्मान का भाव विद्यमान था। जैसे ही मानव इस पृथ्वी पर अपनी प्रथम बार आँख खोलता है, वह अपने जीने के अधिकार को प्राप्त कर लेता है।

प्रकृति ने प्रत्येक मानव को जन्म से समान बनाया है, सृष्टि को उत्पन्न करने वाली शक्ति ने उसे जन्म से ही कुछ मूलभूत अधिकारों से सम्पन्न कर दिया है। इनमें जीवन, स्वतन्त्रता और सुखानुभूति सम्मिलित है। अधिकारों की रक्षा करने के लिए राज्य, राजा व सरकार का प्रादुर्भाव हुआ। प्रत्येक राजा व राज्य का यह दायित्व है, कि वह अपने नागरिकों को सम्मानजनक जीवन जीने के लिए उचित वातावरण उपलब्ध करवाये। जब–जब व्यक्ति को अपने मूलाधिकारों से वंचित किया जाता है, वह उठकर खड़ा हो गया है। भारत का स्वाधीनता संग्राम, रूसी क्रान्ति, अमेरिकी क्रान्ति, चीनी क्रान्ति आदि सभी मानवाधिकारों की रक्षा के लिये अस्तित्व में आयीं।

सामान्य रूप से मानवाधिकार का तात्पर्य है ''प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह किसी भी वर्ण, जाति, लिंग, सम्प्रदाय या किसी मत को मानने वाला हो, सभी को समुचित विकास, संरक्षण और सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार जन्म के साथ ही प्राप्त हो जाना चाहिए।'' 4 जुलाई, 1776 में अमेरिकी स्वतन्त्रता के घोषणा–पत्र में इसी प्रकार के विचार सम्मिलित हैं।[2] मानवाधिकार का महत्व इस बात पर आधारित है कि रोटी, कपड़ा और मकान जहाँ व्यक्ति के लिए आवश्यक है, वहीं उसको गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिये आवश्यक परिस्थितियाँ उपलब्ध कराई जायें। भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मूल अधिकार व राज्य के नीति निर्देशक तत्त्व मानवाधिकार व उनके संरक्षण की स्पष्ट घोषणा करते हैं।[3] 1215 में मैग्नाकार्टा, द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् 1945 संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना[4] 1950 में भारतीय संविधान व 1993 में भारत में मानवाधिकार आयोग की स्थापना इन सभी के पीछे मानवाधिकारों की रक्षा की भावना ही निहित है।[5]

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का जयघोष करने वाली हमारी वैदिक संस्कृति न केवल मानव बल्कि प्रत्येक प्राणी के प्रति उदार दृष्टिकोण रखने की प्रेरणा देती है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, स्मृतियाँ, उपनिषद् मानव के गरिमामयी जीवन के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। रामायण जो कि हिन्दू धर्म का आदर्श ग्रन्थ है, मानवाधिकार व उनके संरक्षण के उदाहरणों की अद्भुत झाँकी प्रस्तुत करता है। भगवान श्रीराम जीवन पर्यन्त मानवाधिकार के संरक्षण के लिये संघर्षरत रहे। उनका जन्म ही प्रजा कल्याण के लिए हुआ है। जैसा कि नारद कहते हैं–

प्रजापति समः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीव लोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।[7]

श्रीराम के राज्य में लोग प्रसन्न, सन्तुष्ट, पुष्ट, धार्मिक रोग–व्याधि से मुक्त होंगे, उन्हें दुर्भिक्ष का भय नहीं होगा। कोई कहीं भी अपने पुत्र की मृत्यु नहीं देखेगा, स्त्रियाँ विधवा नहीं होगी, सदा पतिव्रता रहेगी, किसी को आग का भय नहीं होगा, क्षुधा व चोरी का डर नहीं होगा, सभी नगर और राष्ट्र धन धान्य से सम्पन्न होंगे। सभी प्रसन्न होंगे। यथा–

प्रहृष्ट मुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः।
निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्ष भयवर्जितः।।
न पुत्रमरणं केचिद द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।
नार्यॄाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः।।
न चाग्निजं भयं किंचिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः।
न वातज भयं किंचिन्नापि ज्वरं कृतं तथा।।
न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयं तथा।
नगराणि च राष्ट्राणि धन धान्ययुतानि च।।[7]

नारद के इन कथनों से स्पष्ट है कि रामायणकालीन समाज में मानवाधिकार की अवधारणा कितनी पुष्ट थी। प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार था, उसे अपने व्यक्तित्त्व के सर्वांगीण विकास की आवश्यक परिस्थितियाँ सुलभ थीं। अयोध्यानगरी की समस्त प्रजा धर्मशील, संयमी, सदाप्रसन्न रहने वाले शील व सदाचार से महर्षियों की भाँति निर्मल चित्त वाली हैं–

सर्वे नराश्च नार्यश्च धर्मशीलाः सुसंयताः।
मुदिताः शीलवृत्ताभ्यां महर्षय इवामलाः।।
दीर्घायुषो नराः सर्वे धर्म सत्य च संश्रिताः।
सहिताः पुत्र पौत्रॄा नित्यं स्त्रीभिः पुरोत्तमे।।[8]

अर्थात् ऐसी सदाचारी प्रजा धर्म के मार्ग का अनुसरण करते हुये अपने स्त्री–पुत्र–पौत्रों के साथ रहते थे।''

अयोध्यानगरी के समाज का जो चित्र रामायण में है, वह तत्कालीन मानव के गरिमामयी जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। मानव तभी धर्मशील, संयमी प्रसन्नचित्त एवं पुत्र–पौत्र रूपी सम्पत्ति से पूर्ण होगा जब उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए उचित वातावरण उपलब्ध होगा।

अहिल्या जो कि गौतम ऋषि के शाप के कारण शिला रूप में नारकीय जीवन जी रही थी, श्रीराम उसे चरणस्पर्श से गरिमामयी जीवन प्रदान करते हैं–

सा हि गौतम वाक्येन दुर्निरीक्ष्या बभूवह।
त्रयाणामपि लोकानां यावद रामस्य दर्शनम्।
शापस्यान्तमुपागम्य तेषां दर्शन मागता।।[9]

रामायण में वर्णित ऋषि–मुनियों के प्रति हिंसा करने वाले राक्षस मानवाधिकारों का हनन करने वाले क्रूर आक्रान्ता हैं, जो प्रति पल सबको भयभीत करते रहते हैं। उनके प्रति हिंसा करके उनके यज्ञादि में बाधा उत्पन्न करते हैं। राक्षसों से त्रस्त ऋषि विश्वामित्र दशरथ के पास राम–लक्ष्मण को लेने जाते हैं। जिससे राक्षसों के आतंक से समाज को मुक्त किया जा सके। खर, दूषण आदि राक्षस व ताटका राक्षसी मानों ऋषि–मुनियों व साधारण जनों के अधिकारों का हनन करने के लिये उत्पन्न होते हैं। वे ऋषियों के यज्ञ कार्यों को अपवित्र और निर्दोष प्राणियों की हत्या कर देते हैं। श्रीराम ऋषि विश्वामित्र की आज्ञा प्राप्त कर ताटका का संहार करते हैं तथा उसके आतंक से प्रजा को मुक्त कराते हैं–

दृष्ट्वा गाधिसुतः श्रीमानिदंवचनम्ब्रवीत्।
अल ते घृणया राम पापैषा दुष्टचारिणी।।
यज्ञविघ्नकरी यक्षी पुरा वर्धेत मायया।
वध्यतां तावदेवैषा पुरा संध्या प्रवर्तते।।[10]

श्रीराम खर, दूषण व मारीच को भी ऋषि–मुनियों को त्रस्त करने के अपराध व उनके प्रति हिंसा करने के लिए उचित दण्ड देते है। मारीच श्रीराम के बाण के प्रहार से समुद्र पार लंका में गिरता है।[11] यज्ञ में विघ्न डालने वाले समस्त राक्षसों का संहार कर वे ऋषियों द्वारा सम्मानित होते हैं।[12]

रामायण के बालकाण्ड में राजा कुशनाभ की सौ कन्याओं पर वायु की कुदृष्टि पड़ती है, वे बलात् उन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता है, इच्छा पूरी न होने पर सबको कुब्जा बना देता है।[13] वे सभी अत्यन्त कुरूप व शारीरिक पीड़ा को सहन करती हैं व अमानवीय जीवन बिताती हैं, राजा ब्रह्मदत्त उन कन्याओं से विवाह कर उनको पुनः मानवीय जीवन प्रदान करते हैं।[14] रामायण का यह आख्यान वर्तमान समय में युवतियों पर एसिड अटैक के समान ही प्रतीत होता है।

श्रीराम के राज्याभिषेक की सूचना से सभी जन आनन्द से आच्छादित हो जाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि राजा दशरथ की भाँति श्रीराम भी प्रजा के अधिकारों की रक्षा और उनका सब प्रकार से कल्याण करेंगे –

सर्वे ह्यनुग्रीहताः स्म यन्नो रामो महीपतिः।
चिराय भविता गोप्तां दृष्टलोक परावरः।।[15]

वनवास काल में पंचवटी में सभी ऋषि मुनि राक्षसों के अत्याचार व आतंक से पीड़ित है। वे श्रीराम से प्रार्थना करते हैं कि ''हे श्रीराम! इस वन में रहने वाले वानप्रस्थ महात्माओं का यह महान समुदाय, जिसमें ब्राह्मणों की संख्या अधिक है। इसके रक्षक आप हैं। राक्षसों के द्वारा अनाथों के द्वारा मारा जा रहा है। वन में यत्र–तत्र राक्षसों के द्वारा मारे गये मुनियों के कंकालों के ढेर दिखाई देते हैं। इन भयानक कर्म करने वाले राक्षसों ने इस वन में तपस्वी मुनियों का भयंकर विनाश मचा रखा है, वह हम लोगों से सहा नहीं जाता है। इन राक्षसों से हमारी रक्षा कीजिए।''[16]

रामायण में वर्णित ये राक्षस मानवाधिकार का हनन करने वाले आतंकवादियों के समान दृष्टिगोचर होते हैं। श्रीराम उन राक्षसों का संहार करके ऋषियों को उनके आतंक से मुक्ति दिलवाते हैं। सीता श्रीराम से प्रार्थना करती है कि यह सही है, कि राक्षसों का वध ऋषियों व साधारण प्रजा के अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक है, परन्तु इसमें भी निरपराध प्राणी की हानि नहीं होनी चाहिये–

त्वं हि बाण धनुष्पाणि र्भ्रात्रासहवनंगतः।
दृष्ट्वा वनवरान् सर्वान् किंश्चिचत् कुर्याः शरण्ययम्।।
क्षत्रियापामिह धनुर्हुताश्स्ये धनानि चं।
समीपतः स्थितं तेजोबल मुच्छ्रयते भृशम्।।[17]

किष्किन्धाकाण्ड में बालि, सुग्रीव को राज्य से निकाल कर उसकी पत्नी को बलात् अपने पास रख लेता है, तब श्रीराम सुग्रीव की सहायता करते हुये उसके अधिकार की रक्षा कर बालि का संहार करते हैं और उसे किष्किन्धा राज्य का नृपत्व प्रदान करते हैं।[18]

राक्षसराज रावण, जिसके जीवन का उद्देश्य परोत्पीड़न, हिंसा, आतंक, अत्याचार व अन्य जनों के मानवाधिकार का हनन करना है। वह सीता का बलात् अपहरण कर मानवाधिकार का हनन करता है। हनुमान, अंगद, मन्दोदरी, विभीषण एवं उसके इस कुकृत्य में सहयोग देने वाला मारीच भी उसके इस अमानवीय कार्य की निन्दा करता है और उसे यह अपराध करने से रोकता है–

परदाराभिमशर्ति तु नान्यत् पापतरं महत्।
प्रमदानां सहस्राणि तव राजन् परिग्रहे।।[19]

हनुमान के लंका पहुँचने पर रावण तत्काल उनके वध की आज्ञा देता है, परन्तु विभीषण उसे इस कुकृत्य को करने से रोकते हैं–

राजन् धर्मविरुद्धं च लोक वृत्तेश्च गर्हितम्।
तव चासदृशं वीर कपरेस्य प्रमापणम्।।[20]

सीता का अपहरण करने के बाद भी वह उनके साथ कोई असम्मानजनक व्यवहार नहीं करता है। वह सीता से सम्मानजन व्यवहार करता है। यथा– हे मिथलेश नन्दिनि। ऐसी अवस्था में भी जब तुम मुझे न चाहोगी तो तब तक मैं तुम्हारा स्पर्श नहीं करूँगा। भले ही कामदेव मेरे शरीर पर इच्छानुसार प्रहार करें।''[21]
श्रीराम प्रत्येक जीव के सूक्ष्म से सूक्ष्म अधिकार की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। पक्षीराज जटायु को रावण द्वारा धराशायी करने पर श्रीराम विधिपूर्वक मृतात्मा के अधिकार अन्तिम संस्कार की व्यवस्था करते हैं–

सौमित्रे हर काष्ठानि निर्मथिष्यामि पावकम्।
गृध्रराजं दिधक्ष्यामि मत्कृते निधनं गतम्।।[22]

रावण के द्वारा श्रीराम की सेना में भेजे गये दूत जब वानर सेना में वानरों के द्वारा पकड़कर मारे जाते हैं, तब श्रीराम उन्हें तुरन्त छुड़ाकर अभयदान प्रदान करते हैं–

मोचितः सोऽपि रामेण बध्यमानः फलवंगमैः
आनृशंस्येन रामेण मोचिता राक्षसाः परे।।[23]

दुरात्मा रावण से युद्ध व उसके वध के पीछे श्रीराम का उद्देश्य केवल सीता के अपहरण का दण्ड देना नहीं था, बल्कि इस सम्पूर्ण देव व मानव जाति को उसके आतंक से मुक्त करना था। रावण की मृत्यु के पश्चात् विभीषण उसके अन्तिम संस्कार के प्रति अनिच्छा प्रकट करते हुये कहता है–''कि सबके अहित में संलग्न रहने वाला यह रावण भाई के रूप में मेरा शत्रु था। यद्यपि ज्येष्ठ होने के कारण गुरूजनों चित गौरव के कारण वह मेरा पूजनीय अवश्य था। तथापि वह सत्कार के योग्य नहीं है।'[24] परन्तु श्रीराम को यह भलीभाँति ज्ञात है; कि हिन्दू धर्म में अन्तिम संस्कार प्रत्येक मरणात्मा का अधिकार है। वे कहते हैं कि बुरे व्यक्ति के बुरे कर्म उसकी मृत्यु के साथ समाप्त हो जाते हैं, अतः मृत आत्मा के प्रति बैर भाव उचित नहीं है। अतः शीघ्रावण का अन्तिम संस्कार करो–

मरणान्तानि बैराणि निर्वृन्तं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथातव।।[25]

चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् अयोध्या आने पर श्रीराम प्रजा कल्याण के लिये सत्ता सँभालते हैं। राजा बनने के पीछे उनका उद्देश्य प्रत्येक प्राणी के अधिकारों का संरक्षण करना है। उनके राज्य में किसी भी मानव के अधिकार का हनन नहीं होता है। सभी प्रसन्न हैं–

अनामयश्च मर्त्यानां साग्रो मासो मतो ह्मयम्।
जीर्णानामापि सत्त्वानां मृत्युर्नायाति राघवे।।
अरोगप्रसवा नार्यो वपुष्यन्तो हि मानवाः[26]

किसी भी राज्य में प्रजा का विकास व उत्थान तभी होगा जब उनके अधिकारों का पूर्णतया संरक्षण होगा, उन्हें विकास के अवसर समान रूप से प्राप्त होंगे। सभी को जीवन व स्वतन्त्रता का अधिकार होगा। श्रीराम ने तत्कालीन समाज के उद्धार के लिये जो कार्य किये वे वर्तमान समय में पूर्णतया प्रासंगिक व अनुकरणीय हैं। आज हम वैश्विक स्तर पर मानवाधिकार की बात करते हैं, परन्तु जब परिवार में माता–पिता, भाई–बहन, पत्नी के अधिकारों की बात आती है, तब हम पीछे हट जाते हैं।
वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, परन्तु मानवाधिकार का कार्य क्षेत्र उसकी आयु बढ़ने के साथ संकुचित होता जा रहा है। अधिकार प्रदान तो कर दिये हैं, परन्तु उनके संरक्षण की स्थिति चिन्ताजनक है। आतंकवाद, क्षेत्रवाद, राष्ट्रवाद, जातिवाद व बढ़ते सामाजिक अपराध मानवाधिकार के हनन को प्रोत्साहित करते हैं। आतंकवादी रामायण कालीन राक्षसों की भाँति प्रत्येक जन को अपनी हिंसा का शिकार बनाते हैं।
संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्थाएं व एजेन्सियाँ इस दिशा में सरहानीय कार्य कर रही है। ये संस्थाएं विश्व के विभिन्न देशों की जनता के रहन–सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सामाजिक, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने बालकों व शरणार्थियों जैसे विशेष वर्ग को सहायता पहुँचाने तथा वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार के लिए विभिन्न देशों की सरकार से मिलकर कार्य कर रहे हैं।
विश्व स्तर पर मानवाधिकार संरक्षण के लिये किये जा रहे प्रयासों के बाद भी तालिबान, फिलिस्तीन, लीबिया, इराक, चेचन्या में आतंकवाद व अनेक अफ्रीकी देशों में गृहयुद्ध ने मानव जीवन को खतरे में डाल दिया है। मानवों के साथ अमानवीय पाशविक व्यवहार किया जा रहा है। नागरिक अपने मौलिक अधिकारों से वंचित हैं।
आज आवश्यकता इस बात की है, कि इस समस्या के प्रति गहन चिन्तन करके वाल्मीकीय रामायण के आदर्श चरित्रों से प्रेरणा लेकर समाज का नैतिक उत्थान किया जाये। तभी एक व्यक्ति दूसरे के प्रति श्रीराम के समान व्यवहार करेगा। जिस प्रकार श्रीराम–लक्ष्मण ने राक्षसों का वध कर समाज को भयमुक्त किया उसी प्रकार आज भी समाज को भयमुक्त बनाने की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के प्रति प्रेम, स्नेह का व्यवहार करना चाहिये तभी समाज में सभी को समान रूप से जीवन जीने का व अपने व्यक्तित्व के विकास के समान अवसर व परिस्थितियाँ प्राप्त होंगी।

सन्दर्भ सूची

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, डॉ0 सुरेश चन्द्र सिंघल, लक्ष्मीनारायण प्रकाशन, आगरा, पृ0–234
2. मानवाधिकार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, पृ0–13
3. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, डॉ0 सुरेश चन्द्र सिंघल, लक्ष्मीनारायण प्रकाशन, आगरा, पृ0–234–235
4. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, डॉ0 सुरेश चन्द्र सिंघल, लक्ष्मीनारायण प्रकाशन, आगरा, पृ0–245
5. मानवाधिकार अधिकार और संयुक्त राष्ट्रसंघ सतीश कौशिक, पृ0–111
6. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 1/13
7. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 1/90–93
8. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 6/9 व 18
9. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 49/16
10. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 26/21–22
11. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 30/17–18
12. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 30/24
13. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 33/02
14. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, बालकाण्ड 33/22–23
15. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, अयोध्याकाण्ड 6/22

16. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड 6/14–18
17. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड 9/15–20
18. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड 16/38
19. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड 38/30
20. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, सुन्दरकाण्ड 52/6
21. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, सुन्दरकाण्ड 20/06
22. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, अरण्यकाण्ड 68/27
23. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, युद्धकाण्ड 29/27
24. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, युद्धकाण्ड 111/93–94
25. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, युद्धकाण्ड 111/100
26. श्री मद्वाल्मीकीय रामायण गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तरकाण्ड 49/18–19